ISBN: 978-81-19149-40-7

8. भारत में सतत विकास: एक अवलोकन (पर्यावरण के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राजेश मौर्य
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र
शासकीय नेहरू महाविद्यालय,
सबलगढ़ जिला मुरैना.

प्रस्तावना:

किसी ने सच ही कहा है कि इस पृथ्वी पर सबसे खतरनाक जीव मनुष्य ही है, जिसने अपने स्वार्थ और सुविधाओं या अपने जीवन यापन को आरामदायक बनाने के लिए प्रकृति (प्राकृतिक संसाधनों) के साथ खिलवाड़ करना आरंभ कर दिया है। वह (मनुष्य) दिन-प्रतिदिन प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता जा रहा है और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाता जा रहा है, जिसकी वजह से पर्यावरण क्षति (प्रदूषण) और प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा कम या नष्ट होती जा रही है। इसीलिए पर्यावरण संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए सतत विकास की अवधारणा को अपनाया जा रहा है। सतत या धारणीय विकास, एक बहुउद्देशीय अवधारणा है, जिसमें मनुष्य की बुद्धिमत्ता, कल्पना शक्ति, नियोजन एवं प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता, उद्यमशीलता, उत्पादन और पर्यावरण को संरक्षित रखना आदि शामिल है चूंकि यहां केवल पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान आकर्षित किया गया है, इसीलिए सतत विकास का उपयोग पर्यावरण संरक्षण के संबंध में किया गया है।

सामान्य शब्दों में सतत विकास वह विकास है, जिसके अंतर्गत हमें प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार से उपयोग करना है, जिससे हमारी जरूरत पूर्ण होने के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ी के लिए भी यह (प्राकृतिक संसाधन) सुरक्षित रह सके। सतत विकास की पहली परिभाषा **सन 1987 में ब्रंटलैंड रिपोर्ट में इस प्रकार दी गई है:-**सतत विकास, विशेष रूप से, समाज को संगठित करने का एक तरीका है, जिससे कि यह (समाज) लंबी अवधि तक अस्तित्व में रह सके। अर्थात वर्तमान एवं भविष्य दोनों में स्थित लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक या पर्यावरण संसाधनों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना है।(1)

हालांकि विश्व में सतत विकास की अवधारणा की जड़ें सन 1960 के दशक में विभिन्न लेखकों एवं सामाजिक आर्थिक दार्शनिकों के लेखों में पाई गई थी। लेकिन इसका (सतत

विकास) **पहली बार उपयोग सन 1980 में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु अंतरराष्ट्रीय संघ द्वारा प्रस्तुत विश्व संरक्षण रणनीति के तहत किया गया था।(2)** सतत विकास की इस श्रृंखला में भारत भी पीछे नहीं है। भारत वर्ष 2020 से सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर रूप से प्रयत्नशील है। इसे आगे बढ़ाने में हमारी वर्तमान कालीन सरकार (श्री नरेंद्र मोदी) का योगदान रहा है। इस संबंध में (सतत विकास) **श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि-**संपूर्ण वैश्विक समुदाय में भारत का छटवा हिस्सा है। इस दृष्टि से भारतीय लोगों ने विकास संबंधी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए बहुत लंबा इंतजार किया है। इसलिए हमने इसे **एक स्वच्छ एवं हरित** तरीके से उम्मीद से पहले करने का प्रयास किया है।(3)

यह शोध पत्र सतत विकास (पर्यावरण के संदर्भ) की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें हम इसके ऐतिहासिक पक्ष पर दृष्टि डालते हुए सतत विकास की अवधारणा क्या है?, को समझते हुए यह जानने का प्रयास करेंगे कि इस श्रृंखला में भारत कहां पर खड़ा है?, आदि।

8.1 अध्ययन के उद्देश्य:

भारत में सतत विकास की अवधारणा नामक शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए मैंने निम्नलिखित उद्देश्य का निर्धारण किया है।

1. ***सतत विकास के ऐतिहासिक पक्ष पर, दृष्टि डालना।***
2. ***सतत विकास की अवधारणा पर, दृष्टि डालना।***
3. ***सतत विकास की श्रृंखला में भारत कहां पर है?, पर दृष्टि डालना।***

अध्ययन की सामग्री:

यह शोध पत्र पूर्ण रूप से द्वितीयक समंको पर आधारित है, जिसे पूर्ण करने के लिए मैंने विभिन्न समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, शोध जर्नलो और इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइटों से सामग्री एकत्रित की है।

8.1.1 एतिहासिक परिपेक्ष्य:

मैं यह समझता हूं कि, जो विद्यार्थी अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन करते हैं, उन्हें सतत विकास क्या है?, के बारे में अच्छी तरह से मालूम होगा। अर्थशास्त्र में यह अवधारणा एक अनुशासन के माध्यम से सदियों से संचालित है। लेकिन जब सतत विकास की अवधारणा

को पर्यावरण के संदर्भ में देखा जाता है तो यह ज्ञात होता है कि **सन 1960 के दशक के अंत एवं 1970 के दशक के आरंभ में पर्यावरणविदों से लेकर कई गैर-सरकारी संगठनों ने पर्यावरण स्थिरता पर चिंता व्यक्त करते हुए लोगों के सामने रखा और उन्हें जागरुक करने का प्रयास किया।(4)** इसके बाद सन् 1962 में राचेल कार्सन की पुस्तक **द साइलेंट स्प्रिंग** प्रकाशित हुई(5), जिसने संपूर्ण दुनिया में पर्यावरण संरक्षण के बारे में तहलका मचाते हुए पर्यावरण के प्रति लोगों की आंखें खोल दी थी। ठीक उसी समय एक और उल्लेखनीय प्रकाशन, जिसके अंतर्गत एक पुस्तक **द लिमिट्स टू ग्रोथ।(6)** के अंतर्गत भी पर्यावरण संरक्षण संबंधी उल्लेख शामिल था। मैसाचुसेट्स में स्थित एक प्रौद्योगिकी संस्थान की टीम, जिसमें डोनाल्ड और डोनेला मीडोज शामिल थे, ने एक कंप्यूटर तकनीक की मदद से उत्पादन, जनसंख्या और प्रदूषण संबंधी आंकड़े इस आशा से डाले गए कि भविष्य में यह तीनों कारक (जनसंख्या, उत्पादन, प्रदूषण) तेजी से बढ़ते रहेंगे। जब टीम ने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए कि यदि जनसंख्या वृद्धि के साथ भविष्य में प्राकृतिक संसाधन कम होते रहेंगे तो मनुष्य से लेकर समाज तक पर गंभीर परिणाम हमारे सामने प्रकट होंगे। अर्थात विकास करने की सीमाएं प्रदूषण और पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण का कारण बनेगी। **जब यह निष्कर्ष लोगों के सामने आया तो संपूर्ण वैश्विक समुदाय का ध्यान सतत या स्थिरता की अवधारणा की ओर आकर्षित हुआ था।(7)**

वर्ष 1970 में वैश्विक स्तर पर दुनिया का पहला पृथ्वी दिवस समारोह का आयोजन किया गया, **जिसमें पर्यावरण को संरक्षित एवं सुरक्षित बनाए रखने के लिए पर्यावरण संबंधी मुद्दों को सार्वजनिक तौर पर जागरूक किया गया था।(8)** इस दिवस के अवसर पर लोगों के बीच पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए, एक जबरदस्त आवाज उठ खड़ी हुई। **जिसका परिणाम यह हुआ कि वैश्विक स्तर पर संचालित संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण विदों से लेकर गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों को शामिल किया गया था।(9)**

सन 1972 में मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम में एक संयुक्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्वस्थ एवं उत्पादक पर्यावरण, साझा संसाधनों के सहकारी प्रबंधन, प्रदूषण और सीमापार उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण के निवारण हेतु विचार विमर्श किया गया तथा, एक ऐसी **रणनीति बनाई गई, जिससे सीमा पर स्थित पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त किया जा सके।(10)** इसी अवधि में स्टॉकहोम में वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु संधि समझौते के लिए एक मंच तैयार किया गया था, जिसमें विश्व विरासत सम्मेलन, ओजोन परत पर बढ़ता खतरा, और घटते हुए प्राकृतिक संसाधनों पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था।(11) इन सम्मेलनों का आयोजन इसलिए किया गया था, जिससे सतत या टिकाऊ विकास सिद्धांतों को अपनाया जा सके।

आपको ज्ञात होना चाहिए कि अर्थशास्त्र में जनसंख्या वृद्धि या विस्फोट पर एक अर्थशास्त्री **थॉमस माल्थस** ने अपनी अहम भूमिका अदा की थी, जिन्होंने अपने लेख में यह धारणा प्रस्तुत की थी, कि जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि होती है, उस गति से प्राकृतिक संसाधन नहीं बढ़ते हैं। सन 1800 के दशक में इसी अर्थशास्त्री के विचारों को पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत विकास की अवधारणा में प्रस्तुत किया गया था। इस अवसर पर विश्व के विभिन्न पर्यावरण विदों एवं लेखकों के बीच यह बहस हुई थी, कि थॉमस माल्थस ने अपने लेख में, जो धारणा प्रस्तुत की है, कि सीमित प्राकृतिक संसाधन, बढ़ती हुई आबादी के लिए पर्याप्त हैं या नहीं।(12) दरअसल थॉमस माल्थस ने 1798 में अपने एक निबंध में पर्यावरण के मौलिक सिद्धांतों को तैयार किया था, जिसमें उन्होंने बताया था कि मानव की आबादी एक ज्यमीतीय गति से बढ़ती है जबकि प्राकृतिक संसाधन या लोगों के लिए आवश्यक प्राकृतिक जीवन निर्वाह साधन केवल एक अंक में बढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन बचना संभव नहीं है। उनके इस सिद्धांत ने लोगों से लेकर पर्यावरणविदो एंव लेखकों में एक प्रकार की चिंता उत्पन्न कर दी थी और इन सभी लोगों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत विकास की अवधारणा की ओर आकर्षित कर दिया था।

वर्ष 1983 वह वर्ष था, जिसके अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह पता लगाने का प्रयास किया कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की क्या स्थिति है?, यह प्राप्त करने के बाद एक वैश्विक पर्यावरण संरक्षण एजेंडा हेतु एक आंतरिक आयोग का गठन किया गया।(13) जिसने (आंतरिक आयोग) अपनी रिपोर्ट 3 साल बाद इस प्रकार प्रस्तुत की थी कि-**हमारा साझा भविष्य जारी है-**अर्थात भविष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध हैं। बाद में इसमें सामाजिक-आर्थिक व राजनीतिक पहलुओं के अलावा विकास तथा स्थिरता जैसे शब्दों को एकजुट करके एक परिभाषा दी गई, जो इस प्रकार है-**भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरुरतो को पूरा करना है।(14)**

इस प्रकार संपूर्ण विश्व में पर्यावरण के संदर्भ में सतत विकास की अवधारणा का प्रभाव हुआ और वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के संरक्षण व सुरक्षा हेतु सतत विकास के सिद्धांतों को अपनाया गया था।

8.1.2 सतत विकास की अवधारणा:

जब हम सतत विकास शब्द को ध्यानपूर्वक देखते हैं तो हमें इसमें दो शब्द नजर आते हैं। जैसे:-सतत+विकास, यहां सतत का मतलब हिंदी में लगातार या निरंतर से होता है जबकि

अर्थशास्त्र की भाषा में इसे स्थिरता या धारणीय नाम दिया गया है। दूसरा, विकास शब्द का मतलब पूर्व की स्थिति में परिवर्तन या धीरे-धीरे प्रगति की ओर अग्रसर होना है। इस प्रकार सतत विकास का अभिप्राय हुआ किसी भी क्षेत्र में स्थिरता या धारणीयता के संबंध में उत्तरोत्तर प्रगति करते रहना आदि।

हालांकि सतत विकास की अवधारणा एक बहुउद्देशीय अवधारणा है। अर्थात इसका उपयोग अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों या विषय में किया जाता है, लेकिन यहां केवल सतत विकास की अवधारणा का उपयोग पर्यावरण के संदर्भ में किया गया है। **इस दृष्टि से सतत विकास की मूल अवधारणा, पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ी हुई है तथा मानव का पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर रहेना सतत विकास का मूल सिद्धांतों में से एक है।(15)**

यदि हम इस अवधारणा (सतत विकास) को दूसरे दृष्टिकोण से देखे तो इसका मतलब एक स्वस्थ, मजबूत तथा न्याय पूर्ण समाज की स्थापना करना है। अर्थात समाज में जीवन यापन करने वाले सभी लोगों की जीवन निर्वाह संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करना है, फिर वह चाहे, किसी भी धर्म, जाति संप्रदाय का क्यों ना हो, दूसरे शब्दों में हमें प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल इस प्रकार करना चाहिए ताकि वे समाप्त न हो और भविष्य की पीढ़ी को भी इसका (प्राकृतिक संसाधनों) लाभ प्राप्त हो सके।

विश्व के विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने सतत विकास की अवधारणा को एक आर्थिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा और गुणवत्ता, पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्गत जैव-भू-रासायनिक चक्र की अखंडता कायम रहती है, इत्यादि शामिल है।(16)

एक अर्थशास्त्री, जिनका नाम बेन डेन बर्ग (1996) है, ने अपनी सतत विकास की परिभाषा के अंतर्गत उन सब विज्ञानों से संबंधित विषयों को शामिल किया है, **जिसके अंतर्गत पर्यावरण या पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित विषयों का अध्ययन किया जाता है जैसे:-भौतिक पारिस्थितिकी, मानव पारिस्थितिकी, नव शास्त्रीय आर्थिक संतुलन, विकासात्मक पारिस्थितिकी आदि।(17)** इसके अलावा यह (सतत विकास) विज्ञान संकाय के विभिन्न विषयों जैसे:-प्राणीशास्त्र, वनस्पति, विज्ञान, जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भौतिक या प्राकृतिक विज्ञान तथा कला संकाय के दो विषयों, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि से भी संबंधित है। इसीलिए इसका वर्णन करना असंभव है, लेकिन हां, आप किसी एक विषय को लेकर अध्ययन करना चाहते हैं, तो आप आसानी से यह कार्य कर सकते हैं।

जॉनपेजी के अनुसार-सतत विकास, प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित मानवीय जरूरतों की एक श्रृंखला है, जिसमें प्रति व्यक्ति उपयोगिता में किसी भी प्रकार की गिरावट नहीं होगी।(18) लेकिन इन सब परिभाषाओं के बावजूद सतत विकास की, जो परिभाषा प्रस्तुत की गई है,

उनमें ब्रेटलैंड आयोग की सबसे अधिक मान्यता प्राप्त परिभाषा है, जो यह स्पष्ट करता है कि भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करना है।(19) इसे इसलिए सबसे अधिक मान्यता दी गई है क्योंकि इसमें मानव से संबंधित सभी कल्याणकारी कार्यों को शामिल किया गया है। जैसे:-संपूर्ण मानव जाति के लिए आवश्यक प्राकृतिक जीवन निर्वाह सुविधाएं प्रदान करना, देश में व्याप्त गरीबी को समाप्त करना और पर्यावरण की रक्षा करने के साथ-साथ दुनिया भर के लोगों के लिए पर्याप्त भोजन की व्यवस्था करना आदि है, रिपोर्ट का कहना है कि जब तक हम धारणीय या टिकाऊ विकास की अवधारणा को नहीं अपनाएंगे तब तक इन पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान संभव नहीं है।

8.1.3 भारत में सतत विकास की स्थिति:

भारत अपने सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर रूप से प्रयत्नशील रहा है। इसने (भारत) स्वच्छ ऊर्जा से लेकर स्वच्छ जल, स्वच्छ तकनीक, विशेष रूप से, कृषि क्षेत्र में इस्तेमाल करने पर बहुत जोर दिया है। ताकि टिकाऊ कृषि या कृषि क्षेत्र में अत्यधिक उत्पादन की संभावनाओं को जागृत किया जा सके। इसके अलावा। मानव से संबंधित कल्याणकारी योजनाएं भी समय-समय पर सरकार द्वारा संचालित की जा रही हैं, जिन्हें लागू करने में ना केवल केंद्र सरकार बल्कि राज्य सरकार और निजी क्षेत्रों ने भी अपनी अहम भूमिका अदा की है।

भारत में पिछले कुछ वर्षों से सतत विकास की अवधारणा पर विशेष बल दिया जा रहा है। **वर्ष 2020 में भारत सरकार के केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने वर्ष 2018-19 के अपने आर्थिक सर्वेक्षण में कहा है कि-**भारत पर्यावरण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। अर्थात जलवायु परिवर्तन, संसाधन दक्षता और वायु प्रदूषण के समाधान हेतु विभिन्न नीतियों एवं कार्यक्रमों पर जोर दे रहा है।(20) इसमें भारत सरकार ने जलवायु परिवर्तन पर एक राष्ट्रीय कार्य योजना का निर्माण किया है, जो कि **सौर ऊर्जा के 8 प्रमुख मिशन पर आधारित है। जैसे:-पानी, आवास, हरित भारत, टिकाऊ कृषि जलवायु परिवर्तन, हिमालयी, पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखना और ऊर्जा दक्षता में वृद्धि आदि।(21)** यह राष्ट्रीय कार्य योजना भारत के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में एक साथ संचालित करने की योजना है। इसी प्रकार देश में व्याप्त वायु प्रदूषण जैसी ज्वलंत समस्या से निपटने के लिए भारत सरकार ने अपने सतत विकास लक्ष्यों के अंतर्गत **राष्ट्रीय स्वच्छ वायु नामक** कार्यक्रम का शुभारंभ किया है, जिसमें देश के तीन भागों या हिस्सों में वायु प्रदूषण की अत्यधिक समस्याएं व्याप्त है, जैसे:-ठोस अपशिष्ट, कचरा, लैंडफिल, ओधोगिक उत्सर्जन (नगरो या

महानगरों में स्थापित विशाल उद्योगों द्वारा काला धुआं, छोड़ना) सड़क की धूल, बायोमास आदि हेतु एक राष्ट्रीय स्तर की रणनीति तैयार की गई है(22), जिसका कार्य, शहरी क्षेत्रों में एकत्रित अपशिष्ट (कचरा) को समाप्त करना और जन-जन तक स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।

भारत के कुछ राज्य, जो की समुद्र तट पर स्थित हैं, विशेष रूप से, दक्षिण भारत, वहां पर आये दिन समुद्री तूफान एवं चक्रवात की समस्या बनी रहती है। इसलिए भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय चक्रवात जोखिम परियोजना संचालित की है, जो कि भारत सरकार के सतत विकास लक्ष्यों में से एक है। इसके अंतर्गत विभिन्न समुद्री तूफानों या चक्रवात को रोकने या कम करने के लिए देश के तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों मे एक संरचनात्मक कार्य योजना, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सहयोग से संचालित की है। यह प्राधिकरण समय-समय पर समुद्रों की सैर करने वालों तथा मछुआरों को सूचित करता रहेगा ताकि जनहानि की समस्या से निपटा जा सके।

जल, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि जल है, तो जीवन है, कि भी एक ज्वलंत समस्या उत्पन्न हो गई है। दिन-प्रतिदिन घटते जल स्रोत, मानव को यह संकेत दे रहे हैं कि एक दिन संपूर्ण विश्व, जल के लिए एक युद्ध (विश्व युद्ध) को आगाज देगा, भारत में पानी की समस्या अपना विकराल रूप धारण कर चुकी है। यदि हम शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के बीच पानी के मांग की तुलना करें तो यह पता चलता है कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कहीं अधिक मांग है, क्योंकि यहां (ग्रामीणवासी) पर पानी का उपयोग जीवन जीने के साथ-साथ अजीबिका के लिए भी उपयोगी है। **जे.सत्या, पी.आर.शुक्ला तथा रवींद्ननाथन ने अपने एक लेख में उल्लेख किया है कि**-देश के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 70 मिलियन लोग अपना जीविकोपार्जन कृषि से लेकर मत्स्य पालन, वन तथा विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों जैसे:-तटीए क्षेत्र, घास के मैदान, जल व्यवस्था आदि पर सीधे निर्भर है, जो कि पानी की वजह से उपलब्ध रहते हैं।(23) यदि पानी का अभाव होगा तो ग्रामीण वासियों का जीवन यापन मुश्किल में पड़ जाएगा। इसीलिए भारत सरकार ने पानी की समस्या से निपटने तथा भू-जल संरक्षण प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय निकाय, पंचायती राज, के माध्यम से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में चेक डैम, खेत तालाब, पहाड़ी क्षेत्रों में पानी एकत्रित करने, सतही जल संग्रह, तालाब, बरसात के समय छत के पानी को एकत्रित करने और बूंद-बूंद पानी को बचाने के लिए विभिन्न प्रकार के जन जागरूकता अभियान संचालित किए जा रहे हैं। इसके लिए भारत सरकार ने ग्रामीण स्तर पर संचालित ग्राम पंचायत, ग्राम स्वास्थ्य और स्वच्छता समिति, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल गुणवत्ता, निगरानी और प्रेरणा इत्यादि निकायों को जिम्मेदारी प्रदान की है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि पेयजल की योजनाएं मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और गुजरात इत्यादि में

संचालित है। भारत सरकार ने अपने विकास लक्ष्यों को अपनाने के लिए **नामराई गंगे मिशन** नामक योजना संचालित की है जोकि पूर्ण रूप से पर्यावरण संरक्षण पर आधारित है। इसमें शहरी और ग्रामीण स्वच्छता, सीवरेज परियोजना प्रबंधन और ओधोगिक प्रदूषण, जल उपयोग, दक्षता और गुणवत्ता में सुधार तथा स्वच्छ गंगा निधि आदि इसको पूरा करने के लिए वर्ष 2015 से 2020 की अवधि तक कुल 20000 करोड रुपए का प्रावधान रखा है।(24)

भारत में हेंदराबाद में, स्थित, एक कृषि अनुसंधान संस्थान, ने भी पेयजल हेतु अपनी अहम भूमिका प्रस्तुत की है। इस संस्थान ने पानी से संबंधित वाटरसेड कार्यक्रमों का व्यापक आकलन किया गया, जिसमें यह पाया गया कि वर्ष 2000 से 2005 के बीच, बंजर भूमि में लगभग 8.58 मिलियन हेक्टेयर की कमी की पहचान की है।(25) इस समस्या के समाधान के लिए एकीकृत विकास की विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।

भारत सरकार ने अपने सतत विकास लक्ष्यों के अंतर्गत अपशिष्ट (कचरा) और प्लास्टिक से बने विभिन्न उत्पादों से निजात पाने के लिए एक संस्थान, जिसका नाम सतत विकास प्रौद्योगिकी और पर्यावरणीय परियोजना लिमिटेड है, ने एक ऐसी तकनीक का निर्माण किया है, जिसकी मदद से कचरा या प्लास्टिक को समाप्त करके पेट्रोलियम बनाया जा सकता है।

इसके लिए, एक ऐसे संयंत्र धारी, संस्था होनी चाहिए, जिनकी लागत 23 मिलियन अमेरिकी डॉलर है, प्रतिदिन 2500 लीटर पेट्रोलियम का उत्पादन कर सकते हैं।(26) मेरे ख्याल से सतत विकास के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनाई गई यह तकनीक कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है क्योंकि मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से अपशिष्ट या प्लास्टिक, दोनों ही घातक है, यहां एक तरफ कचरा किसी भी व्यक्ति को गंभीर बीमारी की स्थित मैं पहुंचा सकता है तो दूसरी तरफ प्लास्टिक तुरंत नष्ट ना होने के कारण नालियों या सीवरेज के लिए हानिकारक हो सकता है।

भारत में जितने भी ओधोगिक संस्थान या विनिर्माण करने वाली कंपनियां स्थित हैं, वे सभी एक प्रकार का कार्बन उत्सर्जन नामक धुआं छोड़ने का कार्य करती हैं, जो कि मानव स्वास्थ्य, विशेष रूप से सांस की बीमारी या अस्थमा जैसी बीमारी, सृजित कर सकता है। इसलिए भारत सरकार ने अपने सतत विकास लक्ष्य के तहत इसे समाप्त या नष्ट करने का निर्णय लिया है। एक वेबसाइट के अनुसार-भारत अगले 10 वर्षों में कार्बन उत्सर्जन की मात्रा को कम या समाप्त करने के लिए 10% परिवहन इधन को, पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए डोपिंग डीजल और खाद तेल के साथ बदलने की कोशिश कर रहा है।(27)

भारत सरकार ने इन सभी योजनाओं एवं नीतियों के अलावा भारत सरकार के मंत्रालय ने अपनी सतत विकास लक्ष्यों के अंतर्गत अन्य योजनाओं जैसे:-स्वच्छ भारत मिशन, स्मार्ट सिटी मिशन, शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन के लिए अटल मिशन, मंत्री आवास योजना और रेल मेट्रो परियोजना इत्यादि भी लागू की है।(28)

भारत द्वारा अपने सतत विकास के लक्ष्यों को निरंतर रूप से प्राप्त करने के कारण सतत विकास सूचकांक में काफी सुधार हुआ है। भारत सरकार के नीति आयोग की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार-भारत में ऊर्जा, स्वास्थ्य तथा बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में लगातार अपनी प्रगति दर्ज की है।(29)

यही कारण है कि वर्तमान में भारत सतत विकास लक्ष्यों के सूचकांक में 6 अंकों का सुधार हुआ है। नीति आयोग की एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार-भारत अपने सतत विकास लक्ष्यों के सूचकांक की दृष्टि से वर्ष 2019 के बाद काफी सुधार की स्थिति प्राप्त की गई है, अर्थात वर्ष 2021 में सतत विकास लक्ष्य सूचकांक 60 अंक था, जोकि अब बढ़कर 66 अंक हो गया है।(30)

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि संपूर्ण विश्व के सभी देशों के समान भारत ने भी सतत विकास के क्षेत्र में अपनी प्रगति दर्ज की है।

8.2 निष्कर्ष:

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आज वैश्विक स्तर पर भारत की, जो स्थिति है, जिसे हम महाशक्ति अर्थात वर्तमान में संपूर्ण विश्व में भारत को महाशक्ति का दर्जा देते हैं और दुनिया के अधिकांश राष्ट्र भी, भारत को एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था का दर्जा देते हैं, यह सब तभी संभव हो पाया है, जब हमने भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र पर अपना ध्यान आकर्षित किया है। जिसने सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि मोदी सरकार से पहले भारत बिजली के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समस्या से जूझ रहा था। लेकिन जैसे ही मोदी सरकार आई, वैसे ही बिजली की समस्या का समाधान करने के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विकल्प, जिसे हम, सौर ऊर्जा कहते हैं, ढूंढ निकाला और देश के जिन भागो या हिस्सों में बिजली की समस्या थी, हल हुई, यही नहीं, बल्कि भारत में ऊर्जा प्राप्त करने के लिए कचरे, अपशिष्ट का उपयोग करके पेट्रोलियम बनाने का कार्य किया है, वह काबिले तारीफ है, देश में अभी भी कई ऐसे उद्योग हैं, जो अपशिष्ट, फिर वह चाहे कागज हो या फिर प्लास्टिक, सभी को रीसाइक्लिंग करके, जो नए उत्पाद या ऊर्जा प्राप्ति को ध्यान में रखते

हुए यही कहा जा सकता है कि आज का भारत, एक विकसित भारत है और यदि भारत इसी तरह से आर्थिक या अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में प्रगति करता गया, तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत संपूर्ण विश्व में सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में जाना जाएगा।

8.3 Reference:

1. https://youmatter.world/en/definition/defintion-sustainable-development-sustainbillity.
2. Patil, J.S. & Kadam, B.J. (2014) Sustainable Development in Indian Economic Perspective., Journal of Economics and Sustainable Development., Vol.5, No.19, 2014, PP.144-149.
3. https://pib.gov.in/pressreleaseshare.aspx?prid=1577014.
4. https://www.linkedin.com/pulse/origins-evolution-sustainable-development-concepts-dillion-asher.
5. IBID.
6. A.D. Basiago (1998) Economic, Social and Environmental Sustainability in Development Theory and Urban Planning Practice., The Environmentalist 19, 145-161 (1999), Kluwer Academic Publishers, Boston, Manufactured in the Netherlands.
7. Meadows, Donella, L. Meadows, Gorgen, Randers, and William, W. Bhrens III. (2014) Perspectives, Problems and Models, from the Limits to Growth (1972) in The Sustainable Urban Development Readers, Edited by:- Stephen, M. Wheeler and Timothy Beatley 50-54, New York, Ny:-Routledge.
8. Egelston, Anne, E. (2012) Sustainable Development:-A History, Springer Science and Business Media.
9. IBID.
10. Boyle, A (1995) Human Right:-Approaches To Environmental Protection:-Unnecessary, Undesirable and Unethical? Remark Delivered at, The Research Center for International Law, University of Cambridge, Feb. 17, 1995.
11. IBID.
12. Dixon, J. and Fallon, L.A. (1989) The Concept of Sustainability:-Origins, Extension and Usefullness For Policy., Environmental Division, Working Paper Number One, Washington, DC:-World Bank.
13. Brundtland, Ger., H. (1987) Our Common Future:-Reports of the World Commission on Environment and Development., World Commission on Environment and Development Oxford University.
14. United Nations:-Report of the World Commission on Environment and Development., General Assembly Resolution 42/187., 1987, Dec. 11.
15. https://www.sd-commission.org.uk/pages/what-is-sustainable-development.html.
16. https://www.downtoearth.org.in/classroom/what-is-sustainable-development.29774.
17. To See The Reference Number (2).
18. John Pezzey, Economic Analysis of Sustainable Growth and Sustainable Development., World Environment Department., Working, Paper No.15.
19. WCED (1987) Our Common Future World Commission On Environment and Development., Oxford:- Oxford University Press.
20. To See The Reference Number (3).
21. Government Policy to Achieve Sustainable Development Goals.,

(www.newsonair.com) 23 july 2022, By Rupa Kumari
22. IBID.
23. Sathaye, J., Shukla, P.R. Ravindranathan and, N.H., Climate, Sustainable Development and India:-Global and National Concern., Curr.sci. 2006, 90: 314-325.
24. To See The Reference Number (3).
25. MORD., Annual Report 2007-8, Ministry of Rural Development.
26. https://www.financialexpress.com/news/india-to-replac-10-fuels-with-biofuels/220988/, Last Accessed On 2008, 27 June.
27. IBID.
28. To See The Reference Number (21).
29. https://indbiz.gov.in/india-records-significant-progress-on-sustainable-development-goal.
30. IBID.